2020-21

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist. Osmanabad

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal (Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

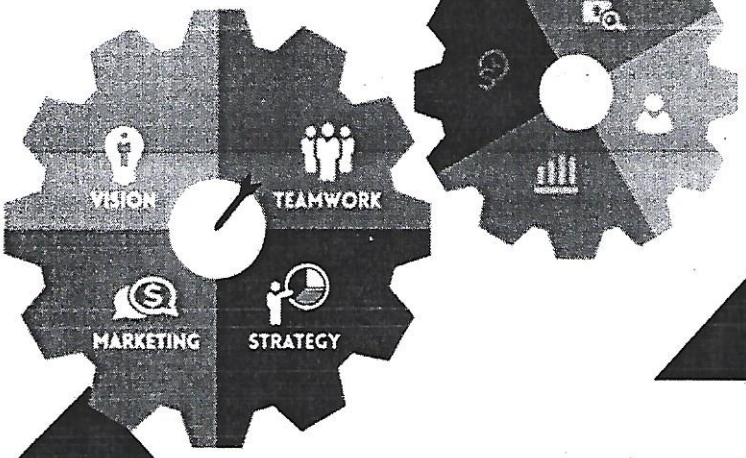

Volume - IX, Issue - II,
April - June - 2020
Part - II

Impact Factor / Indexing
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

Principal
Arts, Science & Commerce College,
Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

Ajanta

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX Issue - II APRIL - JUNE - 2020

PART - II

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist. Osmanabad

VOLUME - IX, ISSUE - II - APRIL - JUNE - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF PART - II

अ.क्र.	लेख और लेखक का नाम	पृष्ठ क्र.
१	दैववैद्य अश्विनीकुमार **द्वारकाधीश दिगंबर जोशी**	१-४
२	संस्कृत साहित्य और आरोग्य **डॉ. सत्येंद्र संगाप्पा राऊत**	५-८
३	प्राचीन भारत में चिकित्सा पद्धति **Srimanta Pahari**	९-१३
४	अथर्ववेद में सम्प्राप्त आयुर्वैदिक चिकित्सा **डॉ. विजय सिंह मीना**	१४-
५	वैदिकवाङ्मय में यज्ञचिकित्सा : (यज्ञौपेथी) **Asso. Prof. Dr. S. R. Bharti**	१७-२२
६	भारतीय संगीत चिकीत्या पद्धति **Dr. Vaishali Deshmukh**	२३-२५

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist. Osmanabad

VOLUME - IX, ISSUE - II - APRIL - JUNE - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

२. संस्कृत साहित्य और आरोग्य

डॉ. सत्येंद्र संगाप्पा राऊत
जवाहर महाविद्यालय, अणदूर, ता. तुलजापूर.

संस्कृत भाषा का साहित्य संसार के सभी के कल्याणमात्र कि अपेक्षा करता है और कहा है –

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुखभाग भवेत् ।।

अत: संस्कृत ग्रंथ रत्नों का ज्ञानसागर इतना गहरा है कि इसीसे संबंधित ज्ञान साहित्य किसी भी दूसरे प्राचीन भाषा का नहीं है और ना ही किसी अन्य भाषा मे है । यह अति प्राचीन होने पर भी इस भाषा की सृजन शक्ति कुंठित नहीं हुई है । संस्कृत मे चार वेदों के साथ आयुर्वेद भी है । आयुर्विज्ञान की वह शाखा है जिसमें उसका संबंध मानव शरीर को निरोग रखने और रोगी हो जाने पर उसे मुक्त कराने मे लाभदायक है । अत: कहा गया है –

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमत्तमम् । रोगास्तस्यापहर्तार श्रेयसो जीवितस्य च ।। चरक

मनशुद्धी वाकशुद्धी आत्मशुद्धी हो तो आत्मिक रोग उत्पन्न ही नहीं सकते । सभी प्रकार के रोगों के समूल निदान के लिए आयुर्वेदिकय सर्वोत्तम चिकित्सा पद्धति है । क्योंकि वर्तमान चिकित्सा पद्धति में जितने भी रोगों का वर्णन प्राप्त होता है उनका सशक्त निदान पहले से आयुर्वेद में उपलब्ध हैं । यही कारण है कि आज सभी विश्व का झुकाव आयुर्वेद की ओर हो रहा है । शारीरिक रोग आदि की समस्या के निदान के लिए विश्व का प्रथम एवं अद्भुत चिकित्सकीय शास्त्र आयुर्वेद के रूप में उपलब्ध है ।

भारतीय संस्कृति में, मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के चार गुणों को प्राप्त करना है । इन चारों सद्गुणों को प्राप्त करने का वास्तविक साधन भी स्वास्थ्य है । एक बीमार व्यक्ति न तो धर्म का ठीक से पालन कर सकता है, न ही वह धन कमा सकता है, उसके लिए काम का आनंद लेना असंभव है और मोक्ष की बात ही छोड़ दो ! वास्तव में, स्वास्थ्य जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण खोज आयुर्वेद में है । इसलिए जीवन में सफलता, शिक्षा, नेतृत्व, राजनीति, व्यवसाय, नौकरी, पैसा कमाना, सभी का निरोगी स्वास्थ्य है । भारतीय जीवनशैली में भी आयुर्वेद का मुख्य उद्देश्य है, पहले स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना और फिर बीमारों की बीमारी को ठीक करना । संपूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए, सभी को स्वास्थ्य देखभाल के नियमों और सिद्धांतों का ज्ञान होना चाहिए और जीवन के आचरण और व्यवहार में उस ज्ञान को लागू करने के लिए ज्ञान होना चाहिए और जीवन के आचरण और व्यवहार में उस ज्ञान को लागू करने के लिए ज्ञान से अधिक महत्त्वपूर्ण हमारा स्वास्थ्य को मजबूती से स्थापित किया जा सकता है । व्यवहार भावनाओं और धारणाओं से प्रेरित

Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist. Osmanabad

होता है, इसलिए प्रत्येंक मनुष्य को छात्र जीवन में ही शरीर को एक मजबूत बनाने कि भावना होनी चाहिए क्योंकि जीवन में पूरी तरह से स्वस्थ और फिट रहना सभी प्रकार की सफलता के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि और सबसे मजबूत आधार है । स्वस्थ रहना सबसे अच्छा धर्म है और बीमार होना महर्षि चरक ने सच कहा है कि –

''प्रज्ञापरोधो हि मूलं रोगाणाम''

दूसरे शब्दो में, मानव बुद्धि की लापरवांही के कारण हुई गलतियाँ इस बिमारी का मूल कारण हैं । मानसिक बीमारी का कारण संस्कृत के ग्रंथो में बताया है कि जो मनुष्य ईर्ष्याशोक भयक्राधमानद्वेषादयश्च ये ।

मनोविकारास्तेऽप्युक्ताः सर्वे प्रज्ञापराधजाः ।।

कहने का तात्पर्य यह है कि जो मनुष्य ईर्ष्याशोक से ग्रस्त है उस व्यक्ति प्रज्ञापराध से दूर रहना है ।

चिकित्सा विज्ञान की परंपरा भारत में ऋग्वेद के कालअ से ही चली रही है । वैदिक युग में अनेक प्रकार की औषधियों का ज्ञान था जैसाकि निम्नलिखित उद्धरण से प्रकट होता है –

या ''फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणी ।

बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहस ।।''

वैदिक साहित्य के अनुसार अश्विनीकुमार, वरूण, रुद्र आणि देवता वैद्य थे । आश्विनी कुमारों की ख्याति नेत्र चिकित्सक एवं टूटी हड्डी में विशेषतज्ञ के रूप में थी । वरूण एक विशाल औषधालय के अध्यक्ष थे, जिसमें सहस्त्रों वैद्य कार्य करते थे (ऋग्वेद १.२४.९)

उस समय रजनी के प्रयोग से कुष्ठ का निदान होता था और अनेक रोगों को उपचार विभिन्न औषधो के प्रयोग से होता था (अथर्ववेद ५.४.१, ६.१३७.१.२३.१.९.८.६)

वैदिक साहित्य के बाद के काल में भरद्वाज नाम के विद्वान को आयुर्वेद का आदि आचार्य कहा गया है । उनके व उनके शिष्यों के बाद पुनर्वसु से दूसरी परंपरा प्रारंभ होती है । पुनर्वसू के छह शिष्यों ने आयूर्वेद की खोज को आगे बढ़ाया । यह शिष्य थे – अग्निवेश, भेल, जतूकर्ण, पाराशर, हारित और क्षारापाणि । इनके पश्चात् चरक का योगदान आता है । चरक संभवत् ईसा पूर्व के काल में थे । चरक संहिता आयूर्वेद का उत्कृष्ट ग्रंथ है । बौद्ध काल में जीवक सर्वश्रेष्ठ वैद्य थे, जिन्होंने तक्षशिला विश्वविद्यालय में ७ वर्ष तक चिकित्सा शिक्षण का अध्ययन किया था ।

चिकित्सा विज्ञान में चरक, वाग्भट और भावमिश्रा का योगदान सराहनीय है । उन्होंने रोगों के निदान एवं उपचार का जो वर्णन किया है, उससे अपरिचित रहकर आजकल के डॉक्टर जनता का अधिक कल्याण नहीं कर सकते । यही नहीं सुश्रुत तो ईसा पूर्व पांचवी शताब्दी में हुए थे और चिकित्सा शास्त्र के सफल आचार्य उस समय भी थे । चरक वाग्भट और भावमिश्र अपने समय के सर्वोत्कृष्ट चिकित्सक भी थे । आयुर्वेद भारतीय परिस्थितीयों के सर्वथा अनुकूल है । इस संदर्भ में कालिदास का श्लोक –

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

दृष्टि देहि पुनर्बाले कमलायत लोचने ।

श्रूयते हि पुरा लोके विषस्य विषमौषधम् ।।

उल्लेखनीय है । जब भी कोई नई बीमारी उत्पन्न होती थी । तो भारतीय आयुर्वेदाचार्य उसका उपाय अवश्य सोचते थे ।

शल्यचिकित्सा का विशेष उपयोग युद्धक्षेत्र में होता था । आयुर्वेद का ज्ञान ब्रह्मा के दक्ष प्रजापति, अश्विनी कुमारो एवं इंद्र ने क्रमश: प्राप्त किया । इंद्रनेह भरद्वाज को यह ज्ञान दिया । भरद्वाज से यह ज्ञान पुनर्वसु ने प्राप्त किया । जिन्हे अत्रि का पुत्र होने के कारण आत्रेय भी कहा जाता था । महर्षि आत्रेय ईसा पूर्व आठवी शती में थे । वे आयुर्वेद के ज्ञाता एवं योग्य शिक्षक थे । ऐसा अनुमान है कि जीवक ने भी आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया था । उन्होंने स्वयं आत्रेय संहिता की रचनाा की थी । आत्रेय के शिष्यों ने अपने – अपने ग्रंथ रचे । प्रारंभ में दो प्रकार के गंथ रचे गए । एक में काय चिकित्सा का वर्णन है जिसे आज चरक संहिता के नाम से जान जाता है । दूसरे प्रकार के ग्रंथ में शल्प चिकित्सा का वर्णन है उसका मुकुटायमान ग्रंथ है 'सुश्रुत संहिता' । सुश्रुत संहिता में संवाद की शैली अपनायी गयी है । वक्ता है धनवंतरी और श्रोता है सुश्रुत । अत:धनवंतरी को शल्य कर्म का जनक माना जाता है । आज भी शल्य क्रिया में निपुण वैद्य को धन्वन्तरि कहा जाता है ।

धनवंतरी का उल्लेख वेदों में तो नहीं मिलता, किंतु भारतीय चिकित्सा पद्धति में उन्हें देव स्वरूप माना जाता है और पौराणिक कथाओं के अनुसार उनकी प्राप्ति समुद्र मंथन के बाद चौदह रत्नों में सेस एक रत्न के रूप में हुई थी । सुश्रुत संहिता के अनुसार, धनवंतरी काशी के राजा थे, उन्ही के उपदेशों के आधार पर सुश्रुत संहिता की भी रचना हुई है । युद्ध भूमि में वैद्यों की भूमिका के संबंध में सुश्रुत का कथन है –

स्कन्धवारे च महति राजगेहादनन्तरम् ।

भवेत्सनिनहितो वैद्यः सर्वोपकारणान्वितः ।।

तत्रस्थमेनं ध्वजवद्यशःख्यातिसमुच्छ्रितम् ।।

सुश्रुत संहिता ३४,१२-१३.

बाद में वाग्भटने शल्य के क्षेत्र में कुछ नवीन प्रयोग भी किए । भारतीय शल्या चिकित्सा की सराहना करते हुऐ मैकडोनल (हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिटरेचर, पृष्ठ ४२७) ने लिखा है कि नाक कट जाने पर पुन: मांसल नाक की रचना की रीति यूरोप ने आधुनिक युग में भारत से सीखी है । शल्य क्रिया में सुश्रुत की आज भी सराहना की जाती है । कहा जाता है कि यहां पर शल्कय चिकित्सा के लगभग सवा नौ सौ औजार उपलब्ध और प्रचलित थे । एक बौद्ध ग्रंथ के अनुसार जीवक नामक वैद्य ने एक सेठ के मस्तक का सफल ऑपरेशन किया था ।

पशु चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में 'शालिहोत्र' को ईसा विद्या का जनक माना जा सकता है । यह तथ्य इस बात को प्रमाणित करता है कि यह विद्या भी वैदिककाल उपेक्षित नहीं थी । पशुओं के अनेक बीमारियों का निदान एवं उपचार उस समय विधिवत् होता था । पशुओं की बीमारियों के अनेक नाम दिए गए हैं, पशुओं के अंगों के ऑपरेशन का भी उल्लेख है

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,

। उसी समय पशु चिकित्सा विज्ञान का यहां पर विकास हो रहा था । महाभारत काल में पशु चिकित्सा का विशेष रूप से विकास हुआ था । पाण्डवों मे नकुल और सहदेव इसका विशेषज्ञ माना गया था । महाराज अशोक के काल में भी इस विज्ञान की उन्नति हुई । अशोक ने पशुओं की चिकित्सा का प्रबंध किया था । अर्थशास्त्र के अश्वाध्यक्ष प्रकरणं में स्पष्ट लिखा है कि अश्व चिकित्सकों को शरीर के ऱ्हास व वृद्धि का प्रतिकार करने वाले व ऋतुओं के अनुकूल वाले भोज़न का ज्ञान होना चाहिए । गुप्त युग में पशू, चिकित्सा की उन्नति हुई । वनस्पति विज्ञान के अध्ययन की परंपरा ऋग्वेद के समय से चली आ रही है । ऋग्वेद (१०.९७६) के अनुसार

यत्रोषधीः समग्मत राजानः समितावि‌व ।

विप्रः उच्यते भिषग् रक्षोहामीव चातनः ।।

इससे प्रकट होता है कि आयुर्वेद की दृष्टि से ऋषि लोग वनस्पतियों का अध्ययन करने में रूचि लेते थे । आर्यों का प्रधान व्यवसाय कृषि कार्य थी । संस्कृत साहित्य में वृक्षों को मानव के समान सजीव बताया है और विविध वृक्ष, वनस्पति से अलग अलग बीमारियों का इलाज किया करते थे और आज भी संस्कृत साहित्य में जो आयुर्वेयद तथा उपचार का वर्णन है उसे सभी लोग दृढतापूर्वक विश्वास से अपना इलाज करवा रहे हैं अत: इस बात को संस्कृत साहित्य कि देन भी कहा जा सकता है ।

अत: कहा भी गया है –

हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम् ।

मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते ।।

जागतिक आरोग्य की दृष्टी से कोरोना की महामारीसे बचने के लिए हमें वेदों के विचारों कि ओर लौटना होगा तथा वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना रखते हुए

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्

इस मंत्र के अनुसार हमें इस महामारी संकट से लढने के लिए एकसाथ चलना होगा, एक जैसे सद्विचार अपनाने होंगे तथा हमें अपना स्वास्थ्य निरोगी रखते हुए

सर्वे सन्तु निरामयाः इस वाक्यको सार्थक करना होगा ।

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist. Osmanabad

CONTACT FOR SUBSCRIPTION

AJANTA ISO 9001: 2008 QMS/ISBN/ISSN
Vinay S. Hatole
Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad (M.S) 431 004,
Cell : 9579260877, 9822620877 Ph: 0240 - 2400877
E-mail : ajanta5050@gmail.com Website : www.ajantaprakashan.com

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College
Anadur, Tal. Tuljapur, Dist. Osmanabad.